उडीक

काळा काळा बादलिया
हिवड़े हेत जगावै।।
उमड घुमड आँधी सागे
क्यूँ बिना बरसियां जावै।।

हल खड़णिया करसा भाई,
बाट जोवता रैवै।।
क्यूँ छेह लेवे रे सांवरिया
जीव जीनावर रोवै।।

खाली कागद लेखक ने
खेत सरीसा लागे,
कलम 'हळ' सूं खड़ खड़ ने
शब्द उगावणा चावै,

कलम री स्याही सूखे तो
आँसु ने स्याही बणावे
हिवड़े रा आखर चोब चोब ने
शब्दां रो धान उगावे

सियाळो उनाळो भोग्यो
चौमासो बिरखा बरसावे,
जीव जिनावर भूखा तिरसा
हिवड़े री भूख मिटावे,

हे कानूड़ा हे रामदेव
अब थांरो ही बिस्वास है
किरपा करो पाणी बरसाओ
आ सगळा री अरदास है

बुढा ठाडा ने टाबर टूबर
दु:ख घणो ही पावे
तिरसां मरता मिनख ने ढांडा
भूखा तिरसा सु जावे,

कुवा बावडी तालाब सुखगया
अब मिनखां री बारी है
हाथ जोड़ अरदास करूँ
अब आगे मर्जी थांरी है

न्यायाधिपति गोपाल कृष्ण व्यास
अध्यक्ष–मानवाधिकार आयोग
राजस्थान